तंत्र बाधा, दरिद्रता अभाव निवृत्ति धूमावती दीक्षा

दूसरों को जानना अच्छी बात है, पर खुद को जानना बुद्धिमानी है। प्रकृति ने प्रत्येक जीवित वस्तु को वह शक्ति प्रदान की है जो उसके अस्तित्व के लिए आवश्यक है। यह शक्ति असंभव को संभव में, उदासी को खुशी में, युद्ध को शांति में और नफरत को प्यार में बदल सकती है।

शक्ति आध्यात्मिक परंपरा की सबसे मूलभूत अवधारणाओं में से एक है। यह दिव्य स्त्रीत्व का प्रतिनिधित्व करती है और आमतौर पर इसे मातृ देवी से जोड़ा जाता है। शास्त्रों के अनुसार, शक्ति ब्रह्मांड की रचना, पालन और विनाश के लिये जिम्मेदार है। मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति उसकी इच्छा शक्ति होती है। यह वह आंतरिक ऊर्जा है, जो व्यक्ति को किसी भी परिस्थिति में न केवल संघर्ष करने की सामर्थ्य देती है, बल्कि उसे सफलता की ओर भी अग्रसर करती है। जब व्यक्ति अपनी इच्छा शक्ति को पहचानता है और उसे सही दिशा में लगाता है, तो वह असंभव को भी संभव कर सकता है। जीवन में आने वाली चुनौतियाँ और विपत्तियाँ हमें तोड़ने के लिये नहीं, बल्कि हमें मजबूत बनाने के लिये आती हैं। इन चुनौतियों का सामना वही व्यक्ति कर पाता है, जिसकी इच्छा शक्ति प्रबल तथा दृढ़ होती है।

माता धूमावती दस महाविद्याओं में सातवीं महाविद्या है। रुद्रामल तंत्र में बताया गया है कि सभी दस महाविद्यायें शिव की शक्तियां हैं। धूमावती को विनाश और रूपांतरण की देवी माना जाता है, धुंए के स्वरूप में माता सती का भौतिक रूप तथा रोग-शोक और दुःख को नियंत्रित करने वाली महाविद्या माना जाता है। पद्म पुराण में बताया गया है देवी धूमावती मां लक्ष्मी की बड़ी बहन है। परंतु इनका स्वरूप मां लक्ष्मी से बिल्कुल उल्टा है। धूमावती पीपल के पेड़ में निवास करती हैं। धूमावती को दरिद्रता, अलक्ष्मी और ज्येष्ठा के नाम से भी जाना जाता है जिनका पाप, आलस्य, गरीबी, दुःख और कुरूपता पर आधिपत्य रहता है।

जीवन के जटिल परिस्थितियों के निवारण हेतु शक्ति तत्व को पूर्णतः आत्मसात करना ही श्रेष्ठतम उपाय है। माता धूमावती का संबंध भूख से भी है। वे अपने भक्तों को कभी भूखा नहीं रहने देती तथा उनके शत्रुओं का भक्षण करती रहती हैं। जिसके फलस्वरुप साधक के पास धन-धान्य, यश-वैभव, प्रतिष्ठा आदि का कोई अभाव नहीं रह जाता। उग्रतारा, उग्र चंडिका जैसी भयंकर प्रवृत्ति वाले देवीयां माता धूमावती से ही प्रकट हुई हैं।

माता धूमावती का प्रिय रंग शुभ्र अर्थात् सफेद है, श्वेत रंग में जीवन के सभी रंगों का मिश्रण होता है। उक्त दीक्षा ग्रहण करने का तात्पर्य भी यही है कि साधक के जीवन में श्वेत रंग के सदृश ही समग्रता व सम्पूर्णता से युक्त स्थितियाँ बननी प्रारंभ हो जाती हैं जिससे उसके जीवन में व्याप्त समस्त प्रकार की कुरुप स्थितियों का शमन होता है। तथा वह देदीप्यमान बनकर जीवन में संपूर्णता को प्राप्त करता ही है।

वास्तव में यह दीक्षा अपने आप में बहुत दुर्लभ है, वे बहुत सौभाग्यशाली मनुष्य ही होते हैं जो इस देव दुर्लभ दीक्षा को पूर्णतः अपने जीवन में आत्मसात कर पाते हैं। प्रत्येक साधक को चाहिए की वह इस अमुल्यतम दीक्षा को अवश्य ही ग्रहण करें।

तंत्र बाधा, दरिद्रता अभाव निवृति धूमावती दीक्षा न्यौछावर ₹1800

दीक्षा हेतु नूतन फोटो व न्यौ. राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर 7568939648

न्यौ. राशि NIDHI SHRIMALI SBI UIT Branch Jodhpur A/c No.:20287318460

Branch Code: 006590 MICR Code: 342002010 IFSC: SBINN0006490

आश्रम:कैलाश नारायण धाम E1077 सरस्वती विहार दिल्ली-34 011-45058768 9950980966

सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash YouTube KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।